ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

हिंदी उपन्यासों में स्वाधीनता आंदोलन का यथार्थ चित्रण

अजय राजेंद्र पाटोळे

पीएच.डी. शोधछात्र,हिंदी विभाग,

डॉ. बा.आं.म. विश्वविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर,

किसी भी देश की पहचान वहाँ की भाषा एवं उससे जुडे साहित्य से होती है, भाषाई रूप से भारत एक समृद्ध राष्ट्र है। भाषा के विविधतापूर्ण परिवेश में हिंदी का एक विशिष्ट स्थान है। साहित्य के द्वारा जनता के मन पर प्रभाव डाला जा सकता है। साहित्य ने लोगों की राष्ट्रवादी भावनाएँ जागृत की। साहित्य ने लोगों को स्वतंत्रता के महत्व के बारे में बताया और उन्हें देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए प्रेरित किया।

भारतीय साहित्य के उपन्यासों में कृषक जीवन और उनकी बदहाली का हाल लिखा गया और लेखक हमेशा किसानों के पक्षधर रहा है। उपन्यासकारों ने कृषक जीवन का चित्रण कर अंग्रेजों की साम्राज्यवादी और औपनिवेशक आर्थिक नीति की आलोचना की जो उनके शासन का स्तंभ थी। 1882 में बंगला उपन्यासकार बंकिमचंद्र चटर्जी ने 'आनंदमठ' उपन्यास का सृजन किया जो बाद में स्वाधीनता आंदोलन में भारतीय युवाओं का प्रेरणास्त्रोत बना। हिंदी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में स्वाधीनता संग्राम के विविध आयामों से प्रभावित होकर उन घटनाओं का वर्णन किया। उनके उपन्यासों के पात्र आजादी की भाषा बोलते है। स्वाधीनता संग्राम से प्रभावीत उपन्यासों की एक लंबी विरासत है। स्वाधीनता संग्राम के प्रारंभ अर्थात 1857 से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ती तक सन 1947 ई. तक के अनेक उपन्यासों में स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण हुआ है।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

हिंदी साहित्यकार भारतेंदू तथा उनके समकालीन लेखकों में स्वदेशी की भावना मौजुद थी। स्वदेशी माल के समर्थन में भारतेंदु ने 'कविवचनसुधा' में गहरी चिंता प्रकट ही है। लाला श्रीनिवास दास कृत 'परिक्षा गुरू' प्रथम उपन्यास है। हिंदी साहित्य का प्रारंभिक उपन्यास होने साथ स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान देनेवाला उपन्यास है। भारतेंदू के समकक्ष लेखकों के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना के साथ सुधारवादी दृष्टिकोन देखने को मिलता है।

प्रेमचंद जी ने 1930 के आरंभ में बनारसदास चतुर्वेदी को लिखे गए पत्र में कहा कि, "मेरी आकांक्षाएँ कुछ नहीं है। इस समय तो सबसे बडी आकांक्षा यही है कि हम स्वराज्य संग्राम में विजयी हो। धन या यश की लालसा मुझे नहीं रही। खाने भर को मिल ही जाता है। मोटर और बंगले की मुझे हवस नहीं। हां यह जरूर चाहता हूँ की दो-चार उँची कोटी की पुस्ते लिखूं पर उनका उद्देश्य भी स्वराज्य विजय ही है।"1

पराधिनता की श्रृंखला तोडने के लिए भारतीयों में नवीन

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

चेतना साहस और शक्ति का संचार प्रेमचंद ने साहित्यद्वारा किया। प्रेमचंद के साहित्य में भारत की आत्मा बोलती है। देश में स्वाधीनता के विचारों का प्रचार उन्होंने साहित्य के माध्यम से उतने ही जोरों से किया जितना की सक्रिय राजनीति में सत्य व अहिसां के द्वारा गांधीजी ने। प्रेमचंद के उपन्यासों में राष्ट्रीय भावों का चित्रण हुआ है। रंगभुमि उपन्यास में मिसेज सेवक और कुंवर साहब के वार्तालाप से प्रेमचंद ने अंग्रेजी राज्य की नियामतों का वर्णन किया है-

"कुंवर : जिस राष्ट्र ने एक बार अपनी स्वाधीनता खो दी वह फिर से उस पद की नहीं पा सकता। दासता ही उसकी तकदीर हो जाती है...

मि. सेवक : (रूखाई से) तो क्या आप यह नहीं जानते कि अंग्रेजों ने भारत के लिए जो कुछ किया है वह शायद ही किसी जाति ने किसी जाति या देश के साथ किया हो।

कुंवर : नहीं, मैं यह नहीं मानता।

मि. सेवक : शिक्षा का इतना प्रचार और भी किसी काल में हुआ था?

कुंवर : मैं इसे शिक्षा ही नहीं कहता जो मनुष्य को स्वार्थ का पुतला बना दे।

मि. सेवक : रेल, तार, जहाज, डाक चे सब विभुतियाँ अंग्रेजों के साथ ही आयी।

कुंवर : अंग्रेजों के बगैर भी आ सकती थी और अगर आयी भी है, तो अधिकार अंग्रेजों के लिए ही।"2

प्रेमचंद स्वाधीनता को जीवन और पराधिनता को मृत्यु समझते थे। उनकी दृष्टि में पराधिनता ही सारे अत्याचारों की मूल है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की शोषणपूर्ण नीति, अंग्रेजी नौकरशाही का आतंकपूर्ण शासन, उनका स्वार्थ अंग्रेजों के पक्षधर जमींदार और पूंजीपति वर्ग के अनाचार इन सबका पर्दाफाश करके उसका विरोध भी किया।

प्रेमचंद के बाद यशपाल जी ने समाजवादी एवं क्रांतिकारी उपन्यास लिखे। उन्होंने 1948 तक 'दादा कामरेड', 'पार्टी कामरेड', 'देशद्रोही' जैसे क्रांतिकारी उपन्यास लिखे। उनमें क्रांतिकारी संगठन की अंग्रेजों के खिलाफ की हुई गुप्त कार्यवाहीयों का घटनाक्रम चित्रित है। 'दादा कामरेड' में दादा के रूप में यशपाल ने चंद्रशेखर आजाद को और हरिश नामक पात्र के रूप में स्वयं को चुना है।

अनंत गोपाल शेवडे ने 'ज्वालामुखी' उपन्यास में क्रांतिकारी आंदोलन की भावनाओं को यथावत रूप में चित्रित किया है। भगतसिंह को फांसी की सजा सुनाने के बाद अदालत में जब जज ने पुछा था कि इस आंदोलन में हिस्सा लेने में तुम्हारा क्या ध्येय था। तो अभिव्यक्ति अजय कुमार ने कहा,

"अपने देश की आजादी
आजादी का मतलब?
विदेशी शासन से पूर्णत: मुक्ति!
यानी तुम अंग्रेजी शासन हटाना चाहते हो अवश्य
किसी भी मार्ग से?
स्वतंत्रता की प्राप्ती के लिए कोई भी मार्ग आखित्यार किया जाए उचित है।
हिंसा भी?
जी हाँ।"3

अजय कुमार के द्वारा लेखक ने अंग्रेजी शासन के विरोध में क्रांतिकारीयों की भावनाओं का चित्रण किया है। गांधीजी अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से आजादी प्राप्त करना चाहते थे। लेकिन भगतसिंह जैसे क्रांतिकारी युवक आजादी के लिए फांसी पर चढे। 'रक्तमंडल' उपन्यास में दुर्गाप्रसाद

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

खत्री ने गदर आंदोलन की घटनाओं का वर्णन किया है। रक्तमंडल उपन्यास का पात्र अमर कहता है, "मेरे मंडल का हुक्म है कि इस देश में जितनी भी फौजी छावनियाँ है सब उडा दी जाये। मैं उसी काम के लिए आया हूँ। मेरा पिता मेरे काम में बाधा डाल देता है तौ मैं उसे अपने रास्ते से हटाकर अपना काम करूँगा।"4

आजादी की लडाई लडने के लिए क्रांतिकारी दलों ने गुप्त संगठन बनाये थे। उसमें महिलाएँ भी सामील थी। यथोपरि उपन्यास में एक महिला के क्रांतिकारी दल में शामिल होने का वर्णन डॉ. शेफाली ने किया है, "दीदी मैं तुमसे सच कहती हूँ कि मैं जिस दल में शामिल होने जा रही हूँ वह मेरे उद्देश्य के सबसे निकट है। क्या?, क्रांतिकारी दल के प्रयत्नों के द्वारा देश को स्वतंत्र करना।"5

क्रांतिकारी संगठनों की गुप्त कारवाईयों से तंग आकर क्रांतिकारी दलों के कई नेताओं एवं उससे जुडे लोगों को गिरफ्तार करके उन्हें जेल में डाल दिया। उनमें रामप्रसाद बिस्मील, अशफाकुल्ला, रोशनसिंह भी थे। 'फाँसी से पूर्व' उपन्यास में अंग्रेजों के शोषण, अन्याय, अत्याचार पूर्व शासन का चित्रण बच्चन सिंह ने किया है। जेल में कैदियों को अच्छा खाना नहीं दिया जाता तब रामप्रसाद बिस्मील और रोशन सिंह तथा अन्य साथी जेल में ही अनशन पर बैठ जाते है। "जेल में अनशन ही सबसे उचित माध्यम हो सकता है और रामप्रसाद बिस्मील अनिश्चित कालीन अनशन पर बैठ गए उनके साथ रोशन सिंह भी थे और कुछ क्रांतिकारी भी। क्रांतिकारी जेल में अनशन कर रहे है। यह बात जंगल की आग की तहर पूरे शहर में ही नहीं शहर की सीमाओं से बाहर भी फैल गई। इससे सरकार चिंतीत हो गई।... अनशन पंद्रह दिनों तक चला।"6

काकोरी कांड तथा रेल से सरकारी खजाने कि लुट के केस में रामप्रसाद बिस्मील को 19 दिसंबर, 1927 को फासी की सजा सुनाई। फाँसी से पूर्व रामप्रसाद बिस्मील से अफसर ने जब पुछा, "तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है?

बिस्मील ने निर्भिकता से उत्तर दिया- मैं ब्रिटीश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।"7

उपन्यास साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों का यथार्थ चित्रण समकालीन लेखकों ने किया है। स्वाधीनता आंदोलनों के अर्जित मूल्यों, आदर्शों को, सामाजिक, राजनीतिक गतिविधियों का उपन्यासकारों ने वर्णन किया है। ब्रिटीश कालीन भारतीय किसान, क्रांतिकारी दल, मजदूर, साम्यवादी दृष्टिकोन, सामाजिक परिस्थितियों तथा ब्रिटिश शासन की कुटनीति का चित्रण हिंदी उपन्यास साहित्य में लेखकों ने यथार्थ रूप से चित्रित किया है।

संदर्भ :

1) कलम का सिपाही, अमृतराय, पृ. 459
2) रंगभूमि, प्रेमचंद, पृ. 269
3) ज्वालामुखी, अनंत गोपाल शेवडे ,पृ. 240
4) रक्तमंडल खंड-1, भाग-2, दुर्गाप्रसाद खत्री, पृ. 8
5) यथोपरी, डॉ. शेफाली, पृ. 217
6) फाँसी से पूर्व, बच्चन सिंह, पृ. 414
7) वही, पृ. 516

Cite This Article: **अ. र. पाटोळे** ***(2024).*** *हिंदी उपन्यासों में स्वाधीनता आंदोलन का यथार्थ चित्रण*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 148–150)
EIIRJ. https://doi.org/10.5281/zenodo.10648905